# What will I write 8 (Version 1)

What will I write, I'm thinking day and night.
I thought about it yesterday, the day before yesterday, and before that as well
What will I write?
Shall I write a poem about a poem?
Poem of Love?
A couple of lines about emotional, romantic love?
What will I write?

Or about the aunty of the morning market-
Who has sit with Egyptian Lotus, and other leafy vegetables
Getting up early at 3am, finishing the household chores,
Arranging soaked rice and sugar crystal for the kids,
Smearing diluted cow dung all over the house,
Then she starts walking-
Some miles across lies the marshland of Boral;
In that marsh, snakes and leeches are a part of everyday struggle
She plucks all the leafy vegetables,
And it becomes late when she reaches the market .
"A bunch of Egyptian Lotus costs a rupee, will you take son?"
-"Aunty please make it three bunches for two rupees"
I listen to this story kneeling down amidst this everyday boredom.
"It sums up to twenty rupees after the market closes at 1pm
Sometimes it even rises to thirty or forty
Then I'll go home with the leftover veggies-
Cooking for dinner is still left
Warm rice and veggies are there for dinner"
What will I write?

I'm thinking of writing about the old man's appeal in the morning.
He was asking for five rupees, to return home at howrah by bus-
I saw him getting many ridicules by the pedestrians
For asking money with this excuse everyday.
After marketing, i didn't have a penny left
I couldn't look at his helpless face;
What will I write?

In the early morning when I stood
With the shopping bag at Gaba's tea stall,
His lively memories came rushing over me.
Just some days ago with the tea cup in hand,
Or while making tea he used to talk
About how he has to get over such financial crisis,
He must survive for the sake of the little five year old girl-
And he hanged himself the next day!
He didn't tell me about his empty stomach for last few days,
Today the five years old little girl
Is standing holding her mother's hand in the tea stall:
What will I write?

Love-hatred, light and dark emotions,
Or the story of changing the society?
Or shall I write a poem about my poem,
In search of heartful sunshine,
Amidst this deep darkness!
What will I write, I think day and night.

**THE POEM "WHAT WILL I WRITE?"(Version 2)**

# WHAT WILL I WRITE?

**(Poet Mr. Sushanta Das)**

What will I write of
I think
Through the day and all through the night
About nature, love, life….
What will I write about?

Or about the daily lives of ordinary people
The hustle of the nearby market
The struggling farmers journey
From the fields to the market
To eke out a livelihood
What will I write about?

Or about the old man
Standing next to the road near the market
Asking for money to get back home
Living through the taunts of the passerbys
Helpless with his lies
Trying to make a living
What will I write about?

Or should I write about the tea peddler
Who used to tell stories –
Struggling to make ends meet
And care for his wife and daughter
Finally giving up
At the end of a rope
Today his family stands next to the tea stall
Uncared, desolate, hungry…..
With an empty stare
What will I write about?

Love, hate, light, darkness…..
Or revolution?
Or about a dark corner of our lives
Searching for a ray of light

Should I write a poem about poems?
Day and night…..
I think……
What will I write about?

## কি লিখবো আমি?

কি লিখবো আমি ভাবছি রাত ভোর।
ভেবেছি কাল, পরশু বা তার আগেও
কি লিখবো আমি?
কবিতাকে নিয়ে লিখবো একটা কবিতা?
প্রেমের কবিতা?
ভাব ভালোবাসা, রোমান্টিক প্রেম নিয়ে লিখবো দু-চার লাইন?
নাকি প্রেম-প্রকৃতি মিশিয়ে লিখবো কিছু?
কি লিখবো আমি?

নাকি সকালের বাঁশদ্রোণী বাজারের সেই মাসিকে নিয়ে–
সে বাজারে বসেছে শাপলা, নটে আর কচুশাক নিয়ে।
ভোর তিনটেতে উঠে ঘরের কাজ সেরে,
বাচ্চাগুলোর জন্যে পান্তা আর বাতাসা বেড়ে ঢেকে রেখে,
সারা ঘরবাড়ী গোবর-জল লেপে
তারপর পথচলা শুরু করে।
কয়েকমাইল পেরিয়ে বোড়ালের বাদাড়।
বাদাড়ে নেমে এক কোমর জলে সাপ, জোঁকেদের সাথে রোজকার লড়াই।
কচুশাক, শাপলা, নটেশাক তুলে আনে সে
এরপর বাজারে আসতে আসতে বেলা হয়ে যায়।
একআঁটি শাপলা একটাকা বাবা, নেবে?
মাসি, তিন আঁটি দু টাকায় দেবে?
রোজকার এই একঘেঁয়েমির মাঝে হাঁটু মুড়ে গল্পো শুনি।
বেলা একটায় বাজার ভাঙলে বিশ টাকা মতো হবে বাবা
কখনো ত্রিশ চল্লিশও হয়ে যায়
আর কিছু বেঁচে থাকা শাক নিয়ে বাড়ী ফিরে যাবো
রাতের জন্যে রান্না আছে পড়ে,
শাক ভাত গরম গরম খাই বাবা রাতে।
কি লিখবো আমি?

লিখবো ভাবছি সকালের সেই বৃদ্ধ মানুষটার আকুতি।
পাঁচটাকা চাইছিলো হাওড়ায় বাড়ী ফেরার বাস ধরবে বলে
পথচলতি অনেকে বিদ্রূপ করছিলো দেখলাম বৃদ্ধকে
রোজ একই অজুহাতে টাকা চাইবার জন্যে।
বাজারের শেষে একটি টাকাও অবশিষ্ট ছিলো না আমার
তাকাতে পারিনি আমি তার অসহায় মুখের দিকে।
কি লিখবো আমি?

গবাদার চায়ের দোকানে সাতসকালে
বাজারের ব্যাগ হাতে যেই দাঁড়ালাম
জলজ্যান্ত গবাদার স্মৃতি ভিড় করে এলো।
এইতো সেদিনও চায়ের গ্লাস হাতে
অথবা চা বানাতে বানাতে গল্পটি করতো।
এতো অর্থকষ্ট কাটিয়ে উঠতে হবে,
শুধু পাঁচ বছরের মেয়েটার মুখের দিকে তাকিয়ে তাকে বাঁচতে হবে।
আর তারপরদিনই ঝুলে পড়লো সে!
আগের কয়েকদিনের অভুক্ত থাকার গল্পটি বলেনি আমায়।
পাঁচ বছরের ছোট্ট মেয়েটা মায়ের হাত ধরে
চায়ের দোকানে দাঁড়িয়ে আজ।
কি লিখবো আমি?

প্রেম-অপ্রেম, আলো-আঁধারির ভালোবাসা
নাকি সমাজ বদলানোর গল্প?
নাকি এ আঁধারের কানাগলিতে
একবুক রোদ্দুরের খোঁজে
আমার কবিতাকে নিয়ে লিখবো একটা কবিতা!
কি লিখবো আমি ভাবছি রাতভোর।

# क्या लिखूं मैं ?

रात दिन सोचता हूँ,
क्या लिखूं ?
कल परसो और इससे पहले भी सोचा,
क्या लिखूं ?
कविता को ही लेकर लिखूं और एक कविता ?
प्रेम की कविता ?
प्यार-जज्बात,रोमांटिक प्रेम को लेकर लिखूं दो चार पंक्ति
या प्रेम और प्रकृति को मिलाकर लिखूं कुछ,
क्या लिखूं मैं ?
या सुबह बांसद्रोणी के बाज़ार वाली उस सब्जी वाली मौसी को लेकर लिखूं ,
जो बाज़ार में कुमुद के फूल और साग लेकर बैठती है
प्रातः तीन बजे उठकर घर का काम निपटाकर,
बच्चों के लिए बासी भात और बताशा ढक कर रख,
पूरे घर को गोबर से लेप कर
फिर काम में आती है,
कुछ मील चलकर
कुमुद के फूल और साग ले लेती है वहां से,
उसके बाद बाज़ार जाते जाते दोपहर हो जाती है l
"कुमुद के एक गुच्छे फूल की एक रूपए कीमत है,बेटे लोगे ?"
"मौसी,३ गुच्छे २ में दोगी ?
रोजमर्रा की जिंदगी में कभी कभी,
बैठकर कहानी सुनता हूँ l
एक बजे बाजार के उठने पर कुल २० रूपए होते हैं ,
कभी कभी तीस-चालीस भी हो जाते हैं l
और जो साग बचते हैं वह घर ले जाती है l
" बेटे हम घर वापस जाकर रात को खाना पकाते हैं l
हम साग और चावल खाते हैं रात को गरमा -गरम l "
क्या लिखूं मैं ?
सोच रहा हूँ सुबह के उस बूढ़े की दीनता की कहानी को
हावड़ा में उसका घर है
पांच रूपए मांग रहा था
बस के लिए,घर लौटने के लिए,
राह चलने वाले बहुत लोग
बूढ़े का मज़ाक उड़ा रहे थे ,
रोज़ एक ही बहाने से पैसे मांगने के लिए l
मेरे पास बाजार के बाद एक भी रूपया तो बचा न था l
पर देख न सका उस असहाय की ओर ,
क्या लिखूं मैं ?

सुबह गबा भैया के चाय की दूकान में,
बाज़ार का थैला लेकर ज्यों ही खड़ा हुआ
गबा भैया की जीती जागती स्मृति मन पर  छा गयी l
उसदिन भी तो चाय का प्याला लिए
चाय बनाते हुए हँसते थे,बोलते थे l
इतना आर्थिक बोझ कैसे सहेंगे ?
सिर्फ पाँच साल की बच्ची के लिए जीना होगा
इसके बाद ही लटक पड़े l
उसके पहले कुछ दिनों तक भूखे रहने की बात मुझे नहीं बताई ,
वह ५ साल की बच्ची माँ का हाथ पकडे
आज चाय की दुकान में बैठती है l
क्या लिखूं मैं ?
प्रेम-जज़्बात,धुप-छाया का प्यार या बदलते समाज की कहानी
या इस अँधेरी गलियों में एक टुकड़े धूप  की तलाश में ,
मेरी कविता को लेकर लिखूं और एक कविता
क्या लिखूं मैं ?
सोचता हूँ दिनभर l